ममता कालिया के उपन्यासों में वर्ग चित्रण (विशेष सन्दर्भ–मध्यम वर्ग)

डॉ0 नीतू सिंह,
प्रवक्ता–हिन्दी
कुँ0 महेश सिंह जगरूपसिंह स्मारक
महाविद्यालय,वत्तूखेड़ा,
अजगैन,उन्नाव,उप्र.

भारत में वर्ग का विभाजन तीन रुपों में किया गया है उच्चवर्ग (पूँजीपति), मध्यम वर्ग सरकारी कर्मचारी, क्लर्क, शिक्षक, बकील आदि, निम्न वर्ग मजदूर , श्रमिक, फेरी वाला, छोटा कृषक या भूमिहीन कृषक आदि । इन तीनो वर्गो मे दो पार्टो के बीच पिसता हुआ स्वम् को बचाता हुआ मध्यम वर्ग है जो वर्तमान को नही भविष्य को बचाने के लिए जी रहा है। ममता कालिया का वर्ग चित्रण- मध्यम वर्ग के रूप मे निम्नवत है-

ममता कालिया के उपन्यासों में मध्यवर्ग-स्त्री-पुरूष

वर्ग का आधार जाति कदापि नही है। वर्ग का आधार तो धन है । सबसे धनी समस्त सुख सुविधाओं से सम्पन्न उच्च वर्ग है उसमें कार्यरत मध्यम वर्ग है सबसे कम निम्न वर्ग है। उन सभी वर्गो में सबसे अधिक देखा जाए तो संघर्षमय स्थिति मध्यवर्ग की है । सामाजिक प्रतिष्ठा, प्रतियोगिता, दैनिक आवश्यकता के साथ भविष्य के लिए निधि संचय करने में वह वर्तमान दाँव पर लगाये हैं।

मैकाइवर और पेज- एक सामाजिक वर्ग सामाजिक स्थिति के आधार पर अन्य लोगों से पृथक किया गया समुदाय का भाग है।

आगवर्न और निमकाफ- समाजिक वर्ग उन व्यक्तियो के समुच्च को कहते हैं ,जिनकी किसी समाज में एक सदृश्य सामाजिक स्थिति हो ।

वास्तव में वर्ग की अवधारणा का आधार आर्थिक है । यह खुला वर्ग है । किसी एक वर्ग से दूसरे वर्ग में प्रवेश के लिए धन महत्व रखता है। जैसे जैसे आर्थिक स्तर उँचा होता है व्यक्ति उँचे या आगे के वर्ग मे प्रवेश कर जाता है।

ममता कालिया ने अपने उपन्यासों कहानियों के लेखन का विषय मध्यवर्ग को विशेषरूप से चुना है जिसका विवेचन निम्नवत है ।

मध्यवर्गीय दाम्पत्य जीवन की विसंगतियाँ–स्त्री पुरूष-

मध्यवर्गीय दाम्पत्य जीवन की विसंगतियोँ को सच्चाई के साथ दिखाता है- बेघर, उपन्यास । अरविन्द जैन ने ममता कालिया के बेघर उपन्यास के संदर्भ में लिखा है 'ममता कालिया का उपन्यास वेघर (1971) अपने रजत जयन्ती वर्ष (1986) तक निरन्तर प्रासंगिक और चर्चा का विषय रहा है 1971 के बाद राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रिय स्तर पर नारी मुक्ति आन्दोलन, यौन क्रान्ति, गर्भपात के कानूनी अधिकार, शिक्षा, सामाजिक मूल्यों में भारी बदलाव

स्त्री चेतना का विकास मीडिया में स्त्रियों की हिस्सेदारी और हस्तक्षेप,आर्थिक आत्मनिर्भरता,टूटते बनते नये नैतिक मापण्ड और चौतरफा दबाव के कारण महा नगरों के उच्च मध्यम और नव धनाद्य वर्ग में कहीं कुछ-कुछ बदलाव सा लगता है। लेकिन अभी अधिकांश मध्य वर्गीय परिवारों की मानसिक बनावट मध्ययुगीन परम्परा और संस्कारों की यथास्थित बनाये हुए हैं ।

परमजीत जब दिल्ली में था उसका जीवन बहुत ही सामान्य था लेकिन जैसे ही वह मुम्बई आया उसका जीवन बदलने लगा। उसके जीवन मे संजीवनी (नायिका) का प्रवेश होता है संजीवनी मध्यम बर्गीय परिवार की आधुनिक युवती है जो अपने पहले प्रेम विपिन द्वारा छली जा चुकी है। लेकिन वह परमजीत के प्रति पूर्ण समर्पित है। परमजीन भी स्वयं को आधुनिक ही बताता है। एक दिन संजीवनी उसे सच्चाई बताती है तो वह उससे कटने लगता है संजीवनी परमजीत के व्यवहार को देखकर , भावी विवाह परिवार के स्वप्न को तिलाजंलि दे देती है, उधर परमजीत माँ- बाप के द्वारा तय किये हुए रिश्ते को स्वीकार कर रमा से विवाह कर लेता है रमा अल्पशिक्षित, फूहड़ लड़की थी जिसने अपना दाम्पत्य जीवन ही अस्त व्यस्त कर लिया। अन्ततः त्रस्त बीमार परजीत की मौत हो जाती है ।

परमजीत के चरित्र के माध्यम से ममता कालिया ने एक ऐसे व्यक्ति का चित्रण किया है, जो मध्य वर्गीय दकियानूसी विचारधारा का प्रतीक है।

एक पत्नी के नोट्स उपन्यास मे नायक अपनी पत्नी की काव्य प्रतिभा को सहन नही कर पाता तथा उसका अपमान भी कर बैठता है।

प्रेम कहानी उपन्यास मे जया अपने डाक्टर पति से जब अपने लिए घर मे समय नही पाता तब बह कहती है- काश मैं तुम्हारी मरीज होती, तो दिन मे कम से कम दो बार तुम मेरा हाल तो पूछते मेरी चिन्ता तो करते। मध्यम वर्गीय पुरूष पैसा कमाने में इस तरह व्यस्त रहते हैं कि वह भूल जाते हैं कि उनका अपना एक परिवार भी है, पत्नी भी है । जो अपना और उसका सानिध्य चाहती है।

सामाजिक प्रतिष्ठा—स्त्री पुरूष

ममता कालिया के कई उपन्यासों कहानियों में इस समस्या का चित्रण किया गया है —नरक दर नरक उपन्यास में नायक जगन एक कॉलेज में प्रवक्ता पद पर कार्या करता है। टूटी सीढ़ियों वाले कृष्ण लॉज को वह हर नहीने नब्बे रुपये देता था उसकी तनख्वाह इतनी कम भी कि अच्छे प्लैट में रहना उसे सपना लगता था। ममता कालिया की कहानियाँ सामाजिक प्रतिष्ठा के संदर्भ में पुरूष की क्षुद्र मानसिकता को भी दिखाती है । मनोविज्ञान कहानी का पुरूष पात्र पत्नी अर्थात नायक स्त्री पात्र अर्थात नायिका का आधुनिकरण तो करता है वह चाहता है जब उसकी मा आये तो पत्नी सारे कार्य छोड़कर रिसीव करने जाये उसे भी दूसरो की तरह व्रत उपवास करने चाहिए । पत्नी की कोई अन्य व्यक्ति प्रशंसा करे तो उसे पसंद नहीं । वह पत्नी से झूठ बुलवाता है कि वह घर पर नही है और स्वयं दोस्तों

से मिलने घर चला जाता है इस कहानी का पति पत्नी पर रौब जताते हुए दिखाया गया है।

दर्पण कहानी का पात्र शादी के बाद अपनी पत्नी की नौकरी छुड़वा देता है-उसे स्त्रियों में बड़बोलापन, निर्भीकता और सक्रियता से बेहद चिढ़ थी । वह चाहता था कि घर की हर बात मे उसकी अनुमति अनिवार्य रुप से ली जाये। सामाजिक प्रतिष्ठा स्त्री पुरूष दोनो के सहयोग से श्रेष्ठ और उच्च बनती है। पुरूष का झूठा अहम् स्त्रियो के सदैव खलता है।

मध्य वर्गीय स्त्री पुरूषो का अविवाहित जीवन एवं पारिवारिक यथार्थ

मध्यवर्गीय अविवाहित स्त्री पुरूष का एक बडा समूह परिवारिक दायित्व पूर्ती के कारण है। परिवार का बोझ उठाते उठाते वह स्वयं के विवाह के बारे मे सोच तक नही पाते। जिन्दगी सात घण्टे बाद की कहानी की नायिका ऐसी पौंढ है जो दफ्तर के बाद बाकी समय मे क्या करे यह उसकी समझ में नही आता। मित्रो की मित्रता में वह उदासीन हो चुका है। आफिस के बाद का समय उसके लिए काटना मुश्किल हो जाता है

स्त्रियों का जीवन पुरूषों की अपेक्षा अधिक संघर्षमय है उनमें एक द्वन्द्व है । उनका अविवाहित होना परिवारिक दायित्व की पूर्ती या धनाभाव के कारण है । अब जब वे कमा रही है तो बाकी का एकान्त समय उन्हें भारी लगता है।

पुरूषों की अपेक्षा स्त्रियों का अविवाहित होना दफ्तरों मे शक की निगाह से देखा जाता है जबकी कारण क्या है। कोई नही जानता , उन्हें सभी के प्रश्नों का उत्तर देना होता है । पुरूषों का कोई सुहाग चिन्ह न होने के कारण वे इस समस्या से मुक्त तो है ।

मध्यवर्ग में अन्तर्जातीय विवाह की समस्या—स्त्री पुरूष

लगभग नब्बे प्रतिशत अन्तर्जातीय या प्रेम विवाह असफल क्यों होते हैं। इस समस्या को गौर से विस्तार करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रेमी पहले तो एक दूसरे के प्रेम मे, स्वप्न लोक की दुनिया में खोये रहते हैं परन्तु विवाह के पश्चात उनका हकीकत से सामना होता है। विवाह उनके जिम्मेदारियों का निर्वाह होता है। मात्र पति पत्नी से ही रिश्ते पूर्ण नही हो पाते। उनके रिस्ते उस बंधन से जुड़ जाते हैं जिनके प्रति वैवाहिक जोड़े के कुछ दायित्व होते हैं ।

बेघर का पुरुष पात्र (नायक) परमजीत संजीवनी स्त्री पात्र (नायिका) से अन्तर्जातीय प्रेम विवाह करने के लिए तैयार हो जाता है । परन्तु मध्यमवर्गीय पुरूष की तुच्छ धारणा को ग्रहण किये दिए वह यह बरदाश्त नही कर पाता कि संजीवनी पहले विपिन नामक पुरूष को चाहती थी। दोनों बाद में अलग- अलग हो जाते हैं ।

ममता कालिया की कहानी जितना तुम्हारा हूँ । नायिका का पति जो विदेश से लौटा है प्रेम विवाह होने के कारण घर के लोगों ने जो उसे (नायिका) यातनाएँ दी हैं उन्हें वह याद करती है वह अपने पति से यह अपेक्षा रखती है कि वह उससे दुःख सुख पूछे। लेकिन उसका पति अब अति आधुनिक बन चुका था,वह उसकी ओर बिलकुल भी

ध्यान नही देता। वह अन्य महिलाओं के बारे में चर्चा करता रहता। इस तरह अन्तर्जातीय विवाह के बाद मध्य वर्ग की स्त्रियों की क्या दुर्दशा होती है एवं पुरूषों की व्यस्तता, उनकी पूर्व प्रेयसी वर्तमान पत्नी के प्रति बदला हुआ व्यवहार , यह सोचने पर विवश कर देता है कि उनसे विवाह करके गलती हुई है ।

मध्यवर्ग की आर्थिक विपन्नता समबन्धी समस्यायें (स्त्री पुरूष)

मध्यवर्ग की आर्थिकि विपन्नता सम्बन्धी समस्याओ का ममता कालिया ने अपने कथा साहित्य में विस्तार से वर्णन किया है। नरक पर नरक उपन्यास इसी समस्या पर आधारित है। शादी की साल गिरह पर जगन (नायक) काफी व्यस्त रहकर खाना बनाकर इन्तजार करती ऊषा (नायिका) आते ही उस पर बरस पड़ी। बाद मे उसे पता चला उसकी गलती नही थी तो ऊषा ने उससे क्षमा माँग ली दूसरी घटना देखिए-फैन्सी ड्रेस कॉम्पटिशन मे गये ऊषा जगन के बेटे बबलू का चमडे का सूट उतार नही पाती । थकी ऊषा सो जाती है। जगन बबलू को चमड़े का सूट पहने देख गुस्सा करने लगता। एक तो पहले ही बैंक किस्त, कर्मचारियों का वेतन बाजार का खर्चा इनसे वह तंग है । उस पर ऊषा का बात बात पर उससे झगड़ा करना मध्यवर्गीय जीवन की नरकीय स्थिति को दर्शाता है । व्यस्तता अधिक हो तो परिवार उपेक्षित हो जाता है। यदि कोई कार्य ही न करोगे तो खाओगे क्या? दोनों के बीच तालमेल बिठाना स्त्री पुरुष दोनों के लिए कठिन हो जाता है।

ममता कालिया ने अपने कथा साहित्य मे आर्थिक व्यवसाय से संघर्ष करते मध्यम वर्ग की पीड़ा का वर्णन किया है । महानगरीय व्यवस्था से जूझते बस्त आदमी के भय का चित्रण किया है– जैसे- देर से दफ्तर पहुँचने का भय, देर से घर वापस ,अच्छी आर्थिक व्यवस्था पर निर्भर है जिसके लिए वे समय गमाये जा रहे हैं। कहीं कहीं तो यह स्थिति स्वयं को भूल जाने तक आ जाती है।

संदर्भ सूची

- बेघर (उपन्यास) ममता कालिया- पृष्ठ -38,40,44,46,55,58,92
- प्रेम कहानी (उपन्यास) ममता कालिया- पृष्ठ -23,28,32,34,56,60
- नरक दर नरक (उपन्यास) ममता कालिया- पृष्ठ -55,62,78,89
- दर्पण (कहानी) ममता कालिया- पृष्ठ -35,38,40,45
- जिन्दगी सात घण्टे बाद की (कहानी)- पृष्ठ -55,56,58
- आधुनिक भारत में जाति-एस0एन0 श्री निवास- पृष्ठ -32,33
- समाजवाद धर्म निर्पेक्षता और सामाजिक न्यास- सुरेन्द्र मोहन- पृष्ठ -18,19,20
- आधुनिक भारत-सुमित सरकार- पृष्ठ -48,49